International Journal of Applied Research 2015; 1(13): 326-328

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(13): 326-328
www.allresearchjournal.com
Received: 29-10-2015
Accepted: 30-11-2015

शारदा
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
एम.एम.कॉलेज, फतेहाबाद

Correspondence
शारदा
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
एम.एम.कॉलेज, फतेहाबाद

हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत गोस्वामी तुलसीदास का प्रभाव–एक अवलोकन

शारदा

सार
गोस्वामी तुलसीदास ने हिन्दी साहित्य में 'रामचरितमानस' जैसे महान ग्रन्थ की रचना की तथा हिन्दी से भक्तिकाल की सगुणधारा के रामभक्त कवि बने। तुलसीदास की भक्ति दास्य भाव की भक्ति है, वे अपने प्रभु राम के प्रति पूर्ण समर्पित थे और राम को अपना स्वामी तथा स्वयं को राम का सेवक मानते थे। तुलसी के राम सगुण साकार है, वे विष्णु के अवतार हैं। आत्म–निवेदन की इस प्रवृति के कारण वे कहते हैं :

''राम सौ बड़ो है कौन मोसो कौन छोटो।
राम सौ खरो है कौन मोसो कौन खोटो।।''

वे अपने इष्टदेव राम को महान एवं सर्वगुण सम्पन्न तथा स्वयं को तुच्छ, छोटा और पानी मानते हैं। वे उच्चकोटि के कवि थे। उनकी कविता में काव्यकला के समस्त उपादानों का पूर्ण उत्कर्ष दिखाई पड़ता है। उनकी मान्यता है कि कविता रूपी सुन्दर मोती का जन्म तब होता है जब हृदय रूपी सागर में पड़ी बुद्धि रूपी सीप में श्रेष्ठ विचार रूपी जल स्वाति रूपी शारदा की कृपया से बरसता है। वे रस को काव्य का प्राणतत्व मानते हुए भी रीति और अलंकार के महत्व को स्वीकारते हैं। जैसे पुष्प में पराग, मकरन्द और सुगन्ध होती है, उसी प्रकार काव्य में भी अनेक प्रकार के अर्थ रूपी रस को व्यंजित करने की क्षमता होती है।

भूमिका
श्रीमद्भगवदगीता से प्रेरणा लेकर गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी के भक्तिकाल की सगुणधारा के रामभक्त कवि हुए हैं। रामचरितमानस इनका अवधी भाषा में रचित रामकथा पर आधृत महाकाव्य है इस ग्रन्थ की रचना लगभग 2 वर्ष 7 माह में हुई। तुलसी के राम सगुण साकार है। वे विष्णु के अवतार हैं तथा शक्तिशील और सौन्दर्य के भण्डार है। धर्म की रक्षा एवं दुष्ट दलन के लिए उन्होंने अवतार लिया है। वे मर्यादा पुरूषोत्तम हैं और समाज के सामने आदर्श प्रस्तुत करते हैं। गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार वे एक आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति व आदर्श राजा के रूप में वे लोकमानस पर अपनी अमिट छाप छोड़ते हैं।
श्रीमदभगवद्गीता द्वारा प्रभावित होकर तुलसीदास की भक्ति भावना का निदर्शन 'विनयपत्रिका' में हुआ है। वे एक समन्वयवादी कवि के रूप में जाने जाते हैं। ज्ञान और भक्ति, सगुण व निर्गुण, शैव व वैष्णव का समन्वय उनके काव्य में मिलता है। भक्तिकाल के वे सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास के महत्वपूर्ण पृष्ठीय बिन्दु
(1) गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति भावना
गोस्वामी तुलसीदास ने श्रीमद्भगवदगीता जैसे महान ग्रन्थ से प्रेरणा लेकर भक्तिकाल की सगुण धारा के अन्तर्गत आने वाली रामकाव्य धारा के प्रतिनिधि कवि बने हैं। उन्होंने अपने सभी काव्य ग्रन्थों में राम के प्रति अनन्य भक्ति भाव व्यक्त किया है। इसीलिए उन्हें राम का एक निष्ठ एवं अनन्य भक्त कहा गया है। तुलसीदास की भक्ति दास्य भाव की भक्ति है। वे अपने प्रभु राम के प्रति पूर्ण समर्पित थे और राम को अपना स्वामी तथा स्वयं को राम का सेवक मानते थे। रामचरितमानस में वे स्पष्ट घोषणा करते हैं कि 'सेवक सेव्य' भाव के बिना कोई व्यक्ति इस संसार सागर से तर नहीं सकता।
''सेवक सेव्य भाव बिनु भव न तरिझ उरगरि।''
तुलसी की भक्ति में 'दैन्य' की प्रधानता है। इस दैन्य के कारण वे अपने इष्टदेव राम को महान एवं सर्वगुण सम्पन्न तथा स्वयं को तुच्छ, छोटा और पापी मानते हैं। आत्म निवेदन की इस प्रवृति के कारण वे कहते हैं :–

''राम सौ बड़ो है कौन मोसो कौन छोटो
राम सौ खरो है कौन मौसो कौन खोटो।

(2) गोस्वामी तुलसीदस की भक्ति पद्धति

तुलसीदास की भक्ति में शरणागति के छह प्रकार भी उपलब्ध होते हैं जिनके नाम हैं–अनुकूल का संकल्प, प्रतिकूल का त्याग, गोप्तृत्वरण, रक्षा का विश्वास, कारूण्य और आत्मनिक्षेप। इस विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि तुलसी अप्रीतम भक्त हैं। उनकी भक्ति दास्य भाव की है जिसमें दैन्य की प्रधानता है। वे राम के प्रति अटल श्रद्वा एवं परम विश्वास से युक्त है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने तुलसी की भक्ति पद्धति पर अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है – गोस्वामी जी की भक्ति पद्धति की सबसे बड़ी विशेषता है– उसकी सर्वांगपूर्णता। जीवन के किसी पक्ष को सर्वथा छोड़कर वह नहीं चलती।'' तुलसीदास जी ने ज्ञान भक्ति का विशद निरूपण रामचरितमानस में किया है। उतरकाण्ड में वे ज्ञानमार्ग को 'कृपाण की धार' के समान कठिन तथा भक्तिमार्ग को सरल, सहज एवं सुगम बताते हैं। यद्यपि ईश्वर को ज्ञान मार्ग व भक्ति मार्ग दोनों से पाया जा सकता है किन्तु भक्तिमार्ग अपनी सरलता एवं सुगमता के साथ अधिक लोकप्रिय है। तुलसीदास ने अपनी भक्ति पद्धति में इसी भक्तिमार्ग का प्रतिवादन किया है।

(3) गोस्वामी तुलसीदास की सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टि

गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी के उन महान कवियों में अग्रगण्य हैं जिनकी कविता का मूल उद्देश्य 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' होता है। वे कविता का उद्देश्य लोकमंगला का विधान करना मानते हैं। तुलसी ने अपने चरितनायक 'राम' को एक आदर्श चरित्र के रूप में प्रस्तुत करते हुए लोकशिक्षा का विधान किया है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उन्हें 'लोकनायक' कहा है उनके अनुसार – ''लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके। तुलसीदास महात्मा बुद्ध के बाद भारत के सबसे बड़े लोकनायक हुए थे। उनका सम्पूर्ण काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है।'' रामचरितमानस में तुलसीदास ने सभी सामाजिक सम्बन्धों का आदर्श रूप प्रस्तुत किया है राम, भरत, लक्षमण, हनुमान आदि अनेक पात्रों के माध्यम से उन्होंने आदर्श सम्बन्धों की परिकल्पना को साकार किया।

(4) गोस्वामी तुलसीदास के काव्य में लोकमंगल

तुलसीदास हिन्दी के ऐसे कवि है जिन्होंने अपनी काव्य रचना का मूल उद्देश्य '–लोकमंगल' का विधान करना स्वीकार किया है। वे कहते हैं :

कीरति भनिति भूति भलन सोई।
सुरसरि सम सथ कह हित होई।।

अर्थात कीर्ति, कविता और ऐश्वर्य वही अच्छा होता हैं जो गंगा के समान सब का हित करने वाला है। जो कविता लोकमंगल का विधान नहीं करती, जिसे पढ़ने के बाद मन में सद्वृतियाँ जागृत नहीं होती। वह भला किस काम की, तुलसी ने यहाँ यही व्यंजना की है। तुलसी केवल यह कहते ही नहीं है अपितु अपनी रचनाओं में लोकमंगल का विधान करते हुए स्वयं इसका पालन भी करते दिखाई पड़ते हैं उनके द्वारा रचित 'रामचरितमानस' लोकमंगल का विधान करने वाला हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है अपने आदर्श चरित्रों के बल पर यह महान ग्रन्थ जन–जन का कण्ठहार बना हुआ है और हिन्दुओं के पूजाघरों में स्थान पा रहा है।

(5) गोस्वामी तुलसीदास की समन्वयकारी भावना

तुलसीदास ने अपने काव्य में समन्वय की विराट चेष्टा की है। उन्होंने अपने समय में व्याप्त सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक क्षेत्रों में व्याप्त विषमताओं को दूर करते हुए प्रत्येक क्षेत्र में समन्वय का अनूठा प्रयास किया हैं। शैव और वैष्णव का समन्वय करते हुए राम से कहलवाते हैं :

सिव द्रोही मम दास कहावा।
सो नर मोहि सपनेहूं नहि भावा।।

इसी प्रकार से निर्गुण और सगुण का तथा ज्ञान और भक्ति का समन्वय करते हुए कहते हैं :

ग्यानहि भगतिहि नहिं कुछ भेदा।
उभय हरहिं भव संभव खेदा।।

जो परमात्मा निर्गुण, निराकार हैं, वहीं भक्तों के प्रेम के वशीभूत होकर सगुण और साकार हो जाता है। इन दोनों में कोई भेद नहीं है।

(6) गोस्वामी तुलसीदास की काव्य दृष्टि

श्रीमद्भगवदगीता शिक्षा प्राप्त करके तुलसीदास शास्त्र पारंगत मनीषी बन गए। जिन्होंने वेद–वेदांगों का गहन अध्ययन किया। काव्य तत्वों से वे भली भांति अवगत थे तथा उन्हें अच्छी बुरी कविता की पहचान थी। उन्होंने 'रामचरितमानस' में अपने काव्य सिद्धातों एवं काव्य दृष्टि का कथन स्थान–स्थान पर किया है। रामचरितमानस के प्रारम्भ में ही उन्होंने जहां रामकथा लेखन प्रारम्भ करने की बात कही है, वही काव्य तत्वों का भी भरपूर उल्लेख किया है।

तुलसी की मान्यता है कि कविता रूपी सुन्दर मोती का जन्म तब होता है जब हद्य रूपी सागर में पड़ी बुद्धि रूपी सीप में श्रेष्ठ विचार रूपी जल स्वांति रूपी शारदा की कृपा से बरसता है। वे उच्चकोटि के कवि थे। उनकी कविता में काव्यकला के समस्त उपादानों का पूर्ण उत्कर्ष दिखाई पड़ता है। उनका भाव निरूपण एवं रस निरूपण अद्भुत एवं अद्वितीय है श्रृंगार रस की मधुरधारा उनके काव्य में समहित है निश्चय ही तुलसी के काव्य में मार्मिकता, प्रभावोत्पादकता, स्वाभाविकता, उदात्तता एवं कलात्मकता विद्यमान है।

7. नारी विषयक दृष्टिकोण

रामकाव्य में स्थान–स्थान पर नारी के विषय में अपना दृष्टिकोण कवियों ने प्रस्तुत किया हैं प्रायः आलोचकों ने तुलसी के नारी विषयक दृष्टिकोण के प्रति पूर्वाग्रह रखते हए उन्हें नारी निन्दक के रूप में निरूपित किया है उनके इस मत का आधार तुलसी द्वारा कही गई निम्न उक्ति है।

''ढोल गंवार शूद्र पशू नारी। जे सब ताड़ने के अधिकारी।''

परन्तु वे यह भूल जाते हैं कि तुलसी ने सीता, पार्वती, अनुसूर्या जैसी नारियों के उज्जवल चरित्र की परिकल्पना करते हुए नारी को सती, पतिव्रता एवं त्यागमयी रूप में प्रस्तुत कर उन्हें गरिमा एवं भव्यता प्रदान की है। उन्होंने नारी के कामिनी रूप की भर्त्सना की है। भामिनी रूप की नहीं। नारी के पतिव्रत धर्म की प्रंशसा करते हुए वे कहते हैं – ''धन्य नारि पतिव्रत अनुसरी।'' विलासिनी एवं कुल्टा नारियों की निन्दा कबीर ने भी की है और तुलसी ने भी। परन्तु उसके आधार पर यह कहना कि ये कवि नारी निन्दक है। इनके प्रति अन्याय ही होगा। सच तो यह है कि इन्होंने निकृष्ट पुरूषों को भी निन्दनीय माना है जो काम के वशीभूत होकर कर्तव्यच्युत हो जाते हैं। तुलसी ने नारी जाति के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करते हुए एवं उसकी पराधीनता को लक्षित करते हुए एक ही पंक्ति में उसकी नियति को स्पष्ट कर दिया है।

''कत विधि सृजी नारि जग माहि। पराधीन सपनेहु सुख नाही।''

नारी के प्रति इन कवियों का दृष्टिकोण तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप ही था। नारी की पीड़ा का जैसा अनुभव इन्होंने किया,

वैसा बहुत कम कवि कर सके है। अतः हमें पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर इनके नारी संबंधी दृष्टिकोण की परीक्षा करनी चाहिए।

निष्कर्ष

श्रीमद्भगतगीता से प्रेरणा लेकर तुलसीदास ने भक्तिकाल की सगुण धारा के अन्तर्गत आने वाली रामकाव्य धारा के प्रतिनिधि कवि बने है। उन्होंने अपने सभी काव्यों ग्रन्थों में राम के प्रति अनन्य भक्तिभाव व्यक्त किया है। इसीलिए उन्हें राम का एकनिष्ठ एवं अनन्य भक्त कहा गया है। वे एक समन्वयवादी कवि के रूप में जाने जाते हैं। ज्ञान और भक्ति, सगुण व निर्गुण, शैव व वैष्णव का समन्वय उनके काव्य में मिलता है।

उनकी कविता का मूल उद्देश्य 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' होता है। वे कविता का उद्देश्य लोकमंगल का विधान करना मानते हैं। उनका रामचरितमानस ग्रन्थ जन–जन का कण्ठहार बना हुआ है और हिन्दुओं के पूजाघरों में स्थान पा रहा है। वे ज्ञान मार्ग व भक्ति मार्ग की तुलना करते हुए भक्तिमार्ग को सहज, सरल व भक्ति मार्ग की तुलना करते हुए भक्तिमार्ग को सहज, सरल एवं सुगम बताते हैं। भक्तिकाल युग के रामकाव्य में इन्होंने अपने समाकालीन कवियों से सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया। अतः वे स्वर्णकाल युग के उत्तम कवि कहलाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

सन्दर्भ सूची

1. पं. सुधाकर पांडेय एवं कुसुमाकर पांडेय, हिन्दी साहित्य चिंतन सम्बन्धित विषयों का अंक– 2009, उत्कृष्ट साहित्य संग्रह, पृ. ठ– 14।
2. प्रो. वासुदेव सिंह एवं डॉ. हिमांशु शेखर सिंह, तुलसीकृत रामचरितमानस का सोपान, अंक 2004, मूलपाठ गीता प्रैस, गोरखपुर संस्करण के अनुसार, पृष्ठ– 22
3. रमणिका गुप्ता (समीक्षक एवं भाष्यकार), हिन्दी साहित्य, जून– 2008, पृष्ठ 201।
4. त्रिवेणी– तुलसी, सूर एवं जायसी पर साहित्य संग्रह, अगस्त 2005, पृष्ठ– 63
5. साहित्य भवन, सी–17, सिकन्दरा (आगरा), जुलाई– 2006
6. डॉ. पूरनचन्द टण्डन एवं श्री चन्द्र मिश्र, हिन्दी साहित्य संस्करण (कला मन्दिर) अक्टूबर– 2009, पृष्ठ संख्या– 37